International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 21-12-2022, Accepted: 07-01-2023, Published: 23-01-2023
Volume 9, Issue 1, 2023, Page No. 21-24

मृदुला गर्ग की साहित्यिक यात्रा

डॉ. तबस्सुम खान, सुजीत कुमार
श्री सत्य सांई विश्वविद्यालय, सीहोर, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
स्त्री सशक्तिकरण के इस दौर में भारतीय नारी–विषयक दृष्टि की प्रासंगिकता अब पूरे विश्व में सिद्व हो रही है। नारी अब अबला, पराश्रिता, सुकोमला नहीं रही। बडे–बडे संघर्षों, चुनौतियों और संकटों में उसकी रचनात्मकता तथा शक्ति–रूपा छवि अब विशेष रूप से उजागर होने लगी है। वह दया, क्षमा स्नेह, वात्सल्य तथा महत्व की प्रतिमूर्ति तो है ही, परिवार, समाज तथा राष्ट्र के निर्माण और विकास में भी हर प्रकार से सक्रिय एवं समाहित दिखने लगी है। वह श्रृद्वा और सम्मान की अधिकारिणी तो सदा से रही है, परन्तु अब वह कर्मशील, कौशलयुक्त तथा अधिकार सम्पन्न छवि के साथ अपनी नई भूमिका में अग्रसर हो रही है। प्राचीन युग में नारी के अविधा माया रूप की स्वीकृति नहीं हुई थी, किन्तु विद्या माया रूप सदैव स्तुत्य एवं वंदनीय रहा है। आज विधि के क्षेत्र में, इंजीनियरिंग के क्षेत्र में, चिकित्सा के क्षेत्र में, रक्षा एवं युद्व के क्षेत्र में, नक्षत्र–विज्ञान या अन्य वैज्ञानिक तकनीकी क्षेत्रों में किसी से पीछे नहीं। भारत ने प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में स्त्री–शक्ति और सामर्थ्य को भली प्रकार उजागर किया है। एक समय था जब स्त्री चार दिवारी में बंदी थी। उसके पास अधिकार नहीं थे। अब वे सब स्वप्न की बातें होती जा रही है। स्त्री ने हमारी व्यवस्था के दोषों और उससे प्राप्त हुए संघर्षों का पूरा इतिहास जी लिया है।अब उसके भीतर एक ज्वलन्त संघर्षशील तथा लक्ष्यगामी महाशक्ति की प्रतिष्ठा होने लगी है। यह हम सभी के लिए गौरव का विषय है। पूरे विश्व में यों स्त्री के साथ कम अन्याय नहीं हुआ है। पुरूष प्रधान व्यवस्था में वह सदैव अपने को शोषित एवं हाशिये पर खडा पाती रही है। संघर्ष का नैरन्तर्य उसे बार–बार अपनी भूमिका में सोचने और कुछ करने को बाध्य करता रहा है। संस्कृत युग से आज तक यदि हम स्त्री संघर्ष की गाथा लिखें तो हमारे सामने सैकड़ों उदाहरण ऐसे आ जाते हैं जिसमें स्त्री ने हर कार्य एवं कार्य क्षेत्र में आदर्श उदाहरण स्थापित किए हैं।

मूल शब्दः मृदुला गर्ग, सशक्तिकरण, नारी

साहित्य यात्रा

मृदुला गर्ग का जन्म साहित्यिक परिवार में हुआ था। पिता साहित्य प्रेमी थे तो मां भी हिन्दी, उर्दू के अलावा अंग्रेजी में भी वर्चस्व रखती थी पिता जी इतिहास में भी रूचि रखते थे जिसका ज्ञान वे बच्चों को देते थे। 1963 के विवाह के बाद मृदुला गर्ग अपने पति के साथ दिल्ली छोड़ के अन्य राज्यों में घुमती रहती थी लेकिन 1974 के बाद वे दिल्ली में ही आकर बस गई।

परिवार की सम्पूर्ण जिम्मेदारियाँ निभाने के साथ ही उन्होंने लेखन का कार्य पूर्ण किया। पति की देखभाल एवं बच्चों की परवरिश में अपना अधिक समय देती थी। मृदुला गर्ग ने 1972 से लेखन की शुरूआत की। 1972 में उनकी पहली कहानी 'रूकावट' सारिका पत्रिका में छपी। उस समय कमलेश्वर उसके संपादक थे, इसके लावा ''हरी विदी'' ''लिली ऑफ दि वैली'' ''दूसरा चमत्कार'' कहानियाँ भी सारिका में प्रकाशित हुई। 1972 में उनकी ''कितनी कैदें'' को कहानी पत्रिका द्वारा प्रथम पुरस्कार, 1974 में दिल्ली लौटने के बाद पहला उपन्यास 'उसके हिस्से की धूप' का प्रकाशन और मध्यप्रदेश साहित्य परिषद से उसे महाराजा वीर सिंह पुरस्कार मिला। लेखिका ने अपने आरम्भिक दिनों के बारे में बताया है– 1975 में 37 वर्ष की आयु में मैंने जो छापना शुरू किया तो धकापेल छपती चली गई और बरसों मेरे मन में जीम पड़ी अनुभूतियाँ पिघलकर ऐसे लावा बन गई थी कि पलभर भी चैन से बैठने न दिया। दस साल के भीतर पाँच उपन्यास, पाँच कहानी संग्रह एवं एक नाटक छप चुके थे, फिर भी पाठक थे कि आराम तसल्ली से पढ़ रहे थे। 1984 के बाद उनकी लेखन गति में एक प्रकार का अर्ध विराम आया। 1984 के बाद तेज गति से हो रहे लेखन में एक लम्बा विराम आया। अगले आठ सालों में दस कहानियाँ और एक नाटक जरूर पर शुरू से आखिरी तक तथ्य की जीवन्त अनुभूति भीतर तड़फड़ाने के बावजूद, उपन्यास शुरू नहीं कर पाई थी। हमें यह नहीं भुलना चाहिए कि लेखिका एक स्त्री है और स्त्री का घर के कामों में इतना समय व्यतीत होता है। इन जिम्मेदारियों से अलग हटकर लिखने के लिए समय निकालना काफी मुश्किल होता है।

1975–76 में एक नुक्कड़ नाटक करने वाली लड़की जो झुग्गी झोंपड़ी में जाकर जागरूकता निर्माण कर रही थी उसका आत्महत्या करना तथा पिता का इमरजैंसी के समय बैचेन रहना, इन दोनों बातों को मृदुला गर्ग ने निकट से देखा था। ''शहर के नाम'' कहानी से इसी की अभिव्यक्ति हुई है। इस कहानी के लिखने के कारणों पर प्रकाश डालते हुए मृदुला गर्ग ने लिखा है ''बरसों वह मेरे मन को झकझोरती रही ऐसी ही एक दो और घटनाएँ जो इमरजेंसी में घटी मेरी स्मृति का सघन अंश बनकर रह गई। मेरे पिता जो इमरजेंसी से बहुत बैचेन थे उसके हटाये जाने का शुभ समाचार पाने के लिए जीवित नही रहे। पिताजी इतिहास में भी रूचि रखते थे। उनको इतिहास की जितनी जानकारी थी वे अपने बच्चों को दे देते थे। मृदुला गर्ग को मिलाकर वे पांच बहनें और एक भाई हैं। बड़ी मंजुल भगत और छोटी चित्रा मुद्गल हिन्दी की जानी मानी लेखिका है।

मृदुला गर्ग ने कहानी लेखन के रूप में लेखन कार्य आरम्भ किया। उनकी कहानियाँ पत्र पत्रिकाओं में पहले छपती थी। बागलकोट में उन्होंने 1970 को लिखना शुरू किया। 1971 में उनकी पहली कहानी ''रूकावट'' सारिका में कमलेश्वर के संपादन में छपी। बाद की लिली ऑफ दि वैली'' दूसरा चमत्कार'', हरी बिंदी'' भी सारिका में ही छपी। 1972 में दूसरी कहानी

''कितनी कैदें'' को कहानी पत्रिका द्वारा पुरस्कार प्राप्त हुआ। दिल्ली में 1974 ई. में स्वतंत्र लेखन शुरू किया। वे आज के साहित्य के सम्बन्ध में लिखती हैं पत्रिकाएँ भी कितनी ढेरों सारिका, कहानी, कल्पना, संवाद नवनीत, धर्मयुग, कहानीकार, रविवार, नवरंग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान आदि। ऐसे संपादक अब

कहां मिलेंगे, पत्रिकाएँ भी अब कहां रहीं? अब तो लेखन को यूँ खाँचों में बाँटा जाने लगा है कि लगता है जल्दी ही रिवाज चल निकलेगा कि कहानी के साथ अपनी जीवनी संपादक को भेजिए। सोचती हूँ अगर 1970 के बजाए मैंने 1990 में लिखना शुरू किया होता तो जाने किस खूँटी पर लटकी पाई जाती।

1970 में ही अभिनय के क्षेत्र में लेखिका ने श्रेय पाया। 1960–1963 तक अर्थशास्त्र की प्राध्यापिका रही लेकिन उन्हें लेखन काय बनावटी लगता था, जिसकी झलक हमें उनके उपन्यास 'उसके हिस्से की धूप' की नायिका 'मनीषा' में साफ नज़र आती है। 1970 के बाद 1971 में दोनों रास्तों से रूख मोड़कर एक सीधे पर कठिन रास्ते साहित्य लेखन पर चल पड़ीं। उन्होंन` अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम लेखन को बनाया। इसलिए 1970 के आस पास लेखन कर्म में जुट गई।

बचपन में ही मृदुला गर्ग ने अपने पिता से विरासत के रूप में साहित्य को अपनाया। उनके साहित्यकार बनने के पीछे मुल कारण उनके जीवन के अनुभव है। उन्होंने हिन्दी और अंग्रेजी के जो भी साहित्य पढ़े, चाहे वे अनुदित हो या मौलिक अनुभव प्राप्त किए। सामाजिक और वैयक्तिक स्तर के अनुभव ही हमारे सामने आए हैं। ''ड्राफ्ट नहीं बनाती हूँ पर दिमाग में सृजन प्रक्रिया चल रही होती है तो खाना पीना, डिस्टर्ब रहता है। किसी भी चीज़ को जी रहे हैं तो वास्तविक व दिमागी दुनिया में जीते हैं। कभी भी पूरी तरह इस दुनिया में नहीं जीते हैं। किसी भी विवाह पार्टी में जाकर सिर्फ इन्जॉय ही नहीं होता। उस प्रसंग को कैसे किसी उपन्यास या कहानी में प्रयोग किया जा सकता है यह ध्यान बना रहता है।''[1]

मृदुला गर्ग अभिव्यक्ति की महता बताते हुए कहाना चाहती है कि जिस प्रकार दुःख और पीड़ा का अनुभव चाहे वह स्त्री की प्रसव वेदना है या किसी भी इन्सान की अपनी शारीरिक या मानसिक दुःख भरी दास्तान, उस पीड़ा का अनुभव चाहे वह बड़ी हो या छोटी, वह आदमी नहीं कर सकता जिसे पीड़ा की कहानी सुनाई जा रही हो।

वही इंसान जिसने यह अनुभव किया है इस पीड़ा की गहराई को अनुभव कर सकता है। उसी प्रकार साहित्यिक कृति के जन्म संबंधी पीड़ा का अनुभव वही साहित्यकार कर सकता है, जिसने इसे अनुभव किया है। रचनात्मक पीड़ा वैयक्तिक होती है। वे अभिव्यक्ति स्वतंत्रता बताने के साथ सामाजिक व्यवस्था के अन्याय के प्रति अपना आक्रोश व्यक्त करती हुई लिखती है कि ''जीवन में जो कुछ घटता है, जो गहरे छूता है व्यथित करता है, जो नाकाबिले बर्दाश्त होता है। सभी तो मन के उस गुप्त कोनों में छिपे होते हैं। जहाँ मेरे परिचित दोस्त, सगे स ंबंधी झाँककर नहीं देख सकते। सब–कुछ बिलकुल अकेले झेलती चली जाती हूँ। फोड़ों की तरह यह अनुभव दुःखते–टीसते हैं। धीरे–धीरे पकते हैं और आखिर एक दिन फूट ही जाते हैं। कहानी, उपन्यास के रूप में जो कुछ सोचती हूँ, महसूस करती हूँ, जो व्यवस्था मुझमें वितृष्णा जगाती है। अन्याय जो क्रोध का उफान लाता है वही तो इन कहानियों और उपन्यासों का कथय है

साहित्यिक यात्रा

भारतीय स्त्री जिस दिन अपने सम्पूर्ण प्राण–प्रवेग से जाग सके, उस दिन उसकी गति रोकना किसी के लिए सम्भव नहीं होगा। उसके अधिकारों के सम्बन्ध में यह सत्य है कि भिक्षावृत्ति से न मिले हैं, न मिलेंगे क्योंकि उनकी स्थिति आदान–प्रदान योग्य वस्तुओं से भिन्न हैं। समाज मे व्यक्ति का सहयोग और विकास की दिशामें उसका उपयोग ही उसके अधिकार, हमारी शक्ति और विवेक के सापेक्ष रहेंगे यह कथन सुनने में चाहे बहुत व्यावहारिक न लगे परन्तु इसका प्रयोग निर्भ्रान्त सत्य सिद्व होगा। अनेक बार नारी की बाह्य परिस्थितियों के परिवर्तन की ओर ध्यान न देकर मैं उसकी शक्तियों को जागृत करके परिस्थितियों में साम्य लाने वाली सफलता सम्भव कर सकी हूँ। समस्या का समाधान समस्या के ज्ञान पर निर्भर है और यह ज्ञान ज्ञाता की अपेक्षा रखता है। अतः अधिकार के इच्छुक व्यक्ति को अधिकारी भी होना चाहिए। सामान्यतः भारतीय स्त्री में इसी विशेषता का अभाव मिलेगा। कहीं उसमें साधारण दयनीयता हैं और कहीं असाधारण विद्रोह है, परन्तु सन्तुलन से उसका जीवन परिचित नही है।

मृदुला गर्ग ने उपन्यास रचना के साथ ही कहानियों का वर्णन भी किया है जिसमें उन्होंने युगीन परिस्थितियों के अनुसार स्त्री पात्रों को परम्परागत सोच से मुक्त कर नई दिशा प्रदान की है। उन्होंने कहानियों में स्त्री पात्रों के अलावा गरीब, बेबस, लाचार एवं असहाय लोगों का भी वर्णन किया है जो कि समाज में निरन्तर संघर्षशील रहते हैं।

उन्होंने आम आदमी के आत्माभिमान, अकेलेपन की त्रासदी, गरीबी आदि की पीड़ाओं, अनुभूतियों एवं संवेदनाओं का सजीव चित्रण किया है। समाज में दोयम दर्जे पर स्थित स्त्री जीवन को ऊपर उठाकर नई दिशा एवं संघर्ष भाव को उजागर किया है और सामाजिक न्याय एवं एकता भाव के साथ नये समाज का निर्माण करना चाहती है। मृदुला गर्ग ने कई कहानियों की रचना कर कथा साहित्य में अपना अपूर्व योगदान दिया है। मृदुला गर्ग ने आठवें दशक के प्रारंभ से ही कहानियाँ लिखना शुरू कर दिया था। उन्होंने समय के साथ भिन्न–भिन्न विषयों पर कहानियाँ लिखी है। उनकी कहानियाँ में स्त्री मन के भावों, सवंदेनाओं और पीड़ाओं के साथ समाज में व्याप्त विसंगतियों का चित्रण भी मिलता है। उनकी कहानियाँ नये भाव बोध को लेकर प्रस्तुत हुई है। वे लिखती है – ''मैं समझती हूँ कि जब लेखक सांस्कृतिक मूल्य व्यवस्था को पुनः परिभाषित करने की प्रेरणा से कहानी के कथ्य, शिल्प व भाषा में प्रयोग करता है। तो हम कह सकते है कि वह उसमें एक नए भाव बोध के स्वर देन` का प्रयोग कर रहा है।''[1]

लेखिका ने पुरानी नारी के आडम्बरों को मिटाकर नारी समाज को नई दिशा व पहचान प्रदान की है। उसे परम्परागत सोच व मूल्यों से मुक्त कर नए भाव बोध से रूबरू करवाया हैं। स्त्री में स्वाभिमान भाव को जगाया हैं एवं दाम्पत्य जीवन की सूक्ष्म भावनाओं एवं तनाव सभी सन्दर्भो को पकड़ा है। और अपनी रचनाओं में उसे व्यक्त किया है तथा नारी मुक्ति के विभिन्न प्रश्नों का समाधान भी प्रस्तुत किया है। आठवें दशक से लेकर अब तक उनके कई कहानी संग्रह प्रकाशित हुए है, इन कथा स ंग्रहो का संक्षिप्त परिचय को इस तरह देखा जा सकता है–

कितनी कैदे – 1975

इस कहानी संग्रह में विचल, कितनी कैदे, झुटपुटा, लौटना और लौटना, एक और विवाह, दुनिया का कायदा, अंदर–बाहर, 'अगर यों होता', 'उनके जाने की खबर', 'हरी बिंदी' नामक कहानियाँ सम्मिलित हैं। 'कितनी कैंदे' मीना और मनोज के बीच उठते मानसिक उथल–पुथल की कहानी है। दाम्पत्य में मीना का ठंडापन मौत को सामने देखकर लिफ्ट में टूट जाता है और मीना अपने पति मनोज को पूर्ण रूप से समर्पित हो जाती है। दाम्पत्य उदासीनता का कारण मीना पर अनेक लड़कों द्वारा नशे की हालत में किया गया बलात्कार रहता है। यद्यपि अंत सामने पाकर भीतरी घुटन के कारण, मीना अतीत की सच्चाई अपने पति को बताकर मुक्ति पा लेती है पर वहीं दूसरी कैद में फँस जाती है। उसके मन में बार–बार यह प्रश्न उठता है कि क्या उसका पति उसे पूर्ण हृदय से स्वीकार कर पाएगा? आगे की जिन्दगी बिना बैर के निभा पाएगा? 'झुटपुटा' कहानी एक युवा लड़के केशव द्वारा अपनी मौसी में मां की जगह सामान्य स्त्री को देखना, मौसी के साथ सपनों में शारीरिक आकर्षण को चित्रित करता है। कहानी यह तथ्य अंकित करती है कि रिश्ते कई माइनों में आज अपनी पहचान खोकर महज स्त्री–पुरुष बन गए। कहानी में बिना

किसी पाप बोध के मानसिक स्तर पर चलने वाले शारीरिक प्रेम–संबंधों को सफाई से चित्रित किया गया है।

मृदुला गर्ग के स्फूट लेखन

मृदुला गर्ग मूलतः कथाकार है, नाटक की दुनिया से वह परिचित है, इसके अलावा वह एक प्रवक्ता भी है। उन्होंने भारतीय समाज को बहुत नजदीक से देखा और परखा भी है। विभिन्न घटनाओ के प्रति वह अपनी राय भी रखती है। किसी एक विषय पर उनके द्वारा व्यक्त किये गये विचार उनके भिन्न–भिन्न लेखों में मिलते हैं। समय समय पर लेखिका ने विभिन्न पत्रिकाओं में लेख लिखे हैं। उन्हीं लेखों का संग्रह 'चुकते नहीं सवाल' है। 'समागम' नामक कहानी संग्रह में उनके दो लेख संग्रहित है। इसके अलावा 'रंग– ढ़ंग' एक निबंध संग्रह भी लिखा है। प्रस्तुत रचनाओं का सामान्य परिचय निम्न रूप से देखा जा सकता है–

चुकते नहीं सवाल

1999 में प्रकाशित यह रचना जिसमें ल`खिका के समय समय पर लिखे लेखों का संग्रह है। इसमें लगभग सोलह लेख है और अंत में संक्षिप्त रूप से जीवन वृत्त। 1984 के बाद लिखे ये लेख पर्यावरण, प्रदुषण और लोकतांत्रिक व्यवस्था से संबंधित लेख है। इन लेखों के बारे में मृदुला गर्ग का यह कथन है – ''इस पुस्तक में जो लेख संग्रहित हैं वे सभी 1984 के बाद पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए है।

पर्यावरण, प्रदुषण और लोकतांत्रिक व्यवस्था से संबंधित काफी लेख 1984 के भोपाल कांड के फौरन बाद 1985 में लिख लिए गये थे। हाल में, जब मैंन` उन्हें काफी वर्षो के अंतराल के बाद पढ़ा तो यह देखकर आश्चर्य हुआ कि वे अभी भी उतने ही प्रासंगिक है। कुछ दुःख भी हुआ, क्योंकि इसका मतलब यह था कि हमारे समाज में इन पंद्रह वर्षो के दोरान कुछ नहीं बदला। कुछ क्षेत्रों में तकनीकी प्रगति अच्छी हुई, खुले बाजार का प्रभुत्व भी बढ़ा, पर जनसाधारण की मूल समस्याएँ वैसी–ही मौजूद रहीं। उनके समाधान के लिए नया सोच या अनुभव सामनें नहीं आया। किसी चीज में बढोतरी हुई तो अभावग्रस्त आबादी में और उसके प्रति उदासीनता और संवेदना में।''[1]

इसीलिए यह लेख आज भी उतने ही प्रासंगिक है। जिनका परिचय निम्न रूप से लिया जा सकता है।

साहित्य, क्या, क्यों और कैसे

शीर्षक से स्पष्ट है कि यह लेख साहित्य के स्वरूप को स्पष्ट करने वाला है। लेखिका साहित्यिक रचना को वैज्ञानिक शोध की तरह मानती है; जो नये संस्कार को जन्म देती है। रचना के माध्यम से रचनाकार भले ही पूर्ण सत्य की अभिव्यक्ति की बात करे यह सच नहीं होता, बल्कि सत्य की खोज के लिए भी रचना लिखी जाती है।

रचनाकार वस्तुस्थिति या सांस्कृतिक सत्ता पर प्रश्न चिन्ह लगाता है और उत्तर पाने के लिए संघर्ष करता है। इसीलिए साहित्य में विविधता भी आती है। लेखिका साहित्य मूल्य के रूप में विविधता, अनेकार्थकता, आत्म–बोध, सम–भाव आदि को स्वीकारती है। साहित्य को 'लोकतांत्रिक चिंतन प्रणाली का अग्रदुत' कहकर हर नयी पीढ़ी द्वारा साहित्यिक रचना की अपार पुर्नमूल्यांकन की स भावनाओं की ओर संकेत करती है। सम–भाव साहित्य लेखन, पठन और आलोचना के लिए अनिवार्य मानती है। साहित्य के स्वरूप पर चर्चा करते हुए लेखिका ने उपन्यास विधा के स्वरूप पर भी प्रकाश डाला है।

उपन्यास को उच्छेदन का एक सशक्त माध्यम मानते हुए उपन्यास की तुलना एक शहर के साथ की गई है। जिसका प्रवेश द्वार भीतर घुसने के बाद बंद होता है। बाहर निकलने के लिए लेखक को कई रास्तों की तलाश करनी पडती है, अनेक दरवाजे दिखाई देते हैं। उसे जो रास्ता दिखाई देने लगता है वह, वह अख्तियार कर लेता है। फिर भी अनेक दरवाजे बाकी रहते हैं जिसमें से किसी एक का चुनाव पाठक भी कर सकता है, क्योंकि पाठक भी पात्रों के साथ एक भरी पूरी यात्रा तय कर लेता है। (पूर्वाग्रह हंस, कला प्रयोजन में प्रकाशित लेखों से)

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि मृदुला जी अपने उपन्यासों में समस्याओं को सिर्फ चित्रित ही नहीं करतीं वरन उसका निदान भी बताती हैं। वे अपने पात्रों को स्थितियों से संघर्ष करते हुए भौतिकता के धरातल से उठाकर तार्किक दृष्टि के साथ अपने अस्तित्व और इच्छाओं के लिए निर्णय लेते हुए दिखाती हैं। उनकी सभी स्त्री पात्र अपने जीवन का निर्णय स्वयं लेती हैं। वे किसी और के सहारे के लिए प्रतीक्षारत नहीं रहतीं। मृदुला गर्ग ने अपने उपन्यासों के माध्यम से समाज के प्रत्येक वर्ग की स्त्री के संघर्षों का चित्रण कर उसकी दशा और दिशा से पाठक वर्ग को अवगत कराया है। वे अपने उपन्यासों के माध्यम से समाज में स्त्री को वस्तु नहीं मनुष्य के रूप में प्रतिष्ठित करने को तत्पर हैं। हिन्दी कथा साहित्य में उनके उपन्यास पहली बार हीनता–ग्रंथी और अपराधबोध से मुक्त एक कुंठा मुक्त स्त्री–चेतना की रचना करते हैं। मृदुला गर्ग के उपन्यासों में चित्रित स्त्री का यह स्वरूप और स्त्री चेतना का यह स्वर स्त्री विमर्श की भविष्योन्मुखी प्रस्तावना है।

मृदुला जी का सबसे पसंदीदा विषय प्रेम है, परन्तु उन्होंने विवाहपूर्व प्रेम की अपेक्षा विवाहेतर प्रेम का चित्रण अपने उपन्यासों में कहीं अधिक किया है। यह वह प्रेम है जिसे समाज ने हमेशा नकारा है और शायद यही कारण रहा है कि उनके 'चित्तकोबरा' उपन्यास को भी विवादों के कठघरे में खड़ा होना पड़ा। हालांकि यह उपन्यास मनुष्य जीवन में प्रेम की सार्थकता सिद्ध करने में तथा उसके विविध वर्णी स्वरूप निर्धारण में बहुत ही अनूठा है तथापि अपने इस उपन्यास में मृदुला जी ने प्रेम का चित्रण जिस रूप में किया है वह कथित तौर पर थोड़ा बोल्ड है। शायद यही बोल्डनेस लोगों को पसंद नहीं आई जिस कारण इस उपन्यास को विवादों से जूझना पड़ा। इस उपन्यास में पुरुष की बराबरी करती स्त्री की देह गाथा और मनः गाथा दोनों का सम्यक चित्रण मिलता है। मृदुला गर्ग ने चित्तकोबरा उपन्यास में पारस्परिकता के विरुद्ध मोर्चा खड़ा करके स्त्री को अनेक तथाकथित मर्यादा बंधनों से मुक्ति दिलाई है। "इस उपन्यास में शीलता और अश्लीलता का प्रश्न उठाकर प्रायः उन समस्याओं से आँखे चुराने की कोशिश होती है, जिनके आधार पर स्त्री को कथित मर्यादा की सीख दी जाती है। यह एक लेखिका के साहस का प्रश्न माना जाना चाहिए कि उसने मजबूती से पारस्परिकता के विरूद्ध खड़े होकर नये समय में नई जीवन दृष्टि की मांग करने की चुनौती प्रस्तुत की है।")

संदर्भ सूची

1. मन्जुल भगतः ''तिरछी बौछारे'', राजपाल एण्ड सन्स, नई दिल्ली, 1997
2. कृष्णा सोबतीः ''डार से बिछुड़ी'', राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण–1972
3. डॉ. पारूकान्त देसाईः ''आधुनिक लेखिकाओं के नगरीय–परीवेश के उपन्यास'', चिन्तन प्रकाशन कानपुर प्रथम संस्करण, 1994
4. मन्नू भंडारीः ''मेरी प्रिय कहानियाँ'', राजपाल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2005
5. चन्द्रकान्ता वांदिवडेकरः ''आधुनिक हिन्दी उपन्यास सर्जन और आलोचना'', नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1985

6. महादेवी वर्माः ''साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबन्ध'', लोक भारती प्रकाशन, इलाहबाद, 1962
7. साहस्त्रवद्धेय (डॉ.) विमलः ''हिन्दी उपन्यासों में नारी का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण'', कानपुर पुस्तक संस्थान, संस्करण–1974
8. शर्मा (डॉ.) गजानन्दः ''प्राचीन भारतीय साहित्य में नारी'', रचना प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण–1971
9. बी. कुप्पुस्वामीः ''बाल व्यवहार और विकास'', विकास पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1976